International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in June 2024, ISSN -2393-8048

खेतड़ी की ऐतिहासिक विरासत का सामान्य अध्ययन

विरेन्द्र कुमार चान्देला, शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

खेतड़ी जो राजस्थान के झुंझुनू जिले (वर्तमान में नवीन जिला नीमकाथाना) में स्थित है, अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के लिए समृद्ध है । यह क्षेत्र न केवल अपने ऐतिहासिक किलों व महलों के लिए जाना जाता है, बल्कि यहां की समृद्ध संस्कृति व परंपरा भी इसे विशेष बनाती है । खेतड़ी ठिकाने की स्थापना 18वीं शताब्दी में शार्दुल सिंह के पोते भोपाल सिंह ने की । खेतड़ी का ऐतिहासिक महत्व यहां के किलो, महलों, छतरियों, तालाब, बावड़ीयों में निहित है । खेतड़ी का भोपालगढ़ एवं बागोर का किला प्रसिद्ध है । खेतड़ी के किले में स्थित महल अपनी सुंदर वह अद्भुत वास्तु कला के उदाहरण हैं । यह अपनी सुंदर चित्रकारी और जटिल डिजाइन के लिए प्रसिद्ध है । इसके अलावा खेतड़ी में कई प्राचीन मंदिर भी हैं । ये मंदिर वैष्णव , शैव और शाक्त संप्रदाय के हैं, जो स्थानीय लोगों की आस्था के केंद्र हैं । सांस्कृतिक दृष्टिकोण से खेतड़ी में त्यौहारों, मेलों का आयोजन होता है, जो यहां की जीवंतता को दर्शाता है । मकर संक्रांति, गणेश चतुर्थी, रामनवमी, होली व दीपावली जैसे त्योहारों पर विशेष उत्सव होते हैं, जिसमें स्थानीय लोग बड़े उत्साह से भाग लेते हैं । यहां के लोक संगीत एवं नृत्य भी इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । खेतड़ी की विरासत में कारीगिरी का भी महत्वपूर्ण स्थान है । यहां के कारीगरों ने अपने हाथों से महल, मंदिर, बावड़िया छतरियों का निर्माण ही नहीं किया बल्कि छोटे मिट्टी व धातु के बर्तन बनाने में भी अपना कौशल दिखाया है ।

खेतड़ी की ऐतिहासिक विरासत का अध्ययन करने के लिए हमें पहले इस क्षेत्र के बारे में जानना होगा । खेतड़ी राजस्थान के झुंझुनू जिले (वर्तमान में नवीन जिला नीमकाथाना) में स्थित एक ऐतिहासिक शहर है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है । खेतड़ी का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा है । हड़प्पा सभ्यता के समय तांबा खेतड़ी की खानों से ही प्राप्त होता था । यहां से तांबा हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों तक जाता था । आज भी यहां पर तांबे का एक बड़ा प्लांट लगा हुआ है इसी कारण इसे ताम्र नगरी भी कहा जाता है । इस शहर का नाम खेतड़ी इसलिए पड़ा क्योंकि पहले इस जगह को ठाकुर भोपाल सिंह के ससुर ठाकुर अमर सिंह निर्वाण के भाई खेत सिंह के नाम पर 'खेत सिंह की बस्ती' के नाम से जाना जाता था । खेतड़ी की सांस्कृतिक विरासत में इसके पारंपरिक त्यौहार, नृत्य, संगीत और कला शामिल हैं । खेतड़ी की ऐतिहासिक विरासत में इसके प्राचीन मंदिर, किले, स्मारक शामिल है । इस शहर में कई प्राचीन मंदिर हैं । जिनमें शिव विष्णु व देवी के मंदिर है । खेतड़ी ठिकाने के गढ़ को भोपालगढ़ के नाम से जाना जाता है ।

भोपाल गढ़

खेतड़ी के प्रमुख ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थल - भोपालगढ़ किले की नींव ठाकुर भोपाल सिंह ने रखी, भोपाल सिंह एवं उसके उतरवर्ती राजाओं ने यहां पर बहुत से महल एवं मंदिरों का निर्माण करवाया, जो उत्कृष्ट वास्तुशिल्प, जटिल डिजाइन एवं सुंदर अलंकृत नक्काशी के लिए जाने जाते हैं । शीशमहल खेतड़ी के भोपालगढ़ में स्थित राजमहल के दूसरे माले में स्थित है । राजमहल के इस कमरे को राजा

ने जयपुर के कारीगरों के द्वारा कांच के टुकड़ों से इस तरह सजाया की इस कमरे में यदि एक दीपक भी जला दिया जाता तो सारे महल में रोशनी हो जाती थी । इस महल की दीवारों पर विभिन्न प्रकार की सुंदर चित्रकारी का अंकन किया गया था । जो आज भी इन दीवारों पर अंकित है । राजदरबार के सामने दूसरा महल रनिवास के कक्ष में राधा और कृष्ण के साथ गोपियों को रासलीला करते हुए चित्र अंकित किए गए थे ।

मोती महल भोपालगढ़ के दूसरे प्रवेश द्वार के उत्तर पश्चिम दिशा में स्थित इस महल में ही खेतड़ी के राजाओं का राजतिलक किया जाता था । इस महल के नीचे भूल भुलैया स्थित है तथा महल के अंदर की तरफ गुप्त सुरंग मौजूद है । यह सुरंग पर्याप्त ऊंची व चौड़ी है, जिसमें से सैनिक घोड़े पर बैठकर किले के बाहर आ जा सकते थे । किले पर आक्रमण होने पर इसी गुप्त रास्ते से सैनिकों को भेज कर शत्रु सेना को घेर लिया जाता था । मोती महल के पास ही रानी महल है । इस महल में राजा की महारानी वह उनकी दासियां रहती थी ।

सुख महल का निर्माण राजा अजीत सिंह ने के द्वारा करवाया गया था । यह उस समय मुख्य रूप से अतिथि गृह के रूप में उपयोग लिया जाता था । इसका सुंदर डिजाइन व अलंकरण आगंतुकों को उस युग की समृद्ध जीवन शैली की झलक प्रदान करता है ।

सुख महल

फतेह बिलास महल (रामकृष्ण मिशन) - शहर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में रामकृष्ण मिशन का एक उल्लेखनीय स्थान है ।जो खेतड़ी के राजा के पूर्व निवास फतेह बिलास पैलेस में स्थित है । जनवरी 1901 को राजा अजीत सिंह का निधन हो गया और जुलाई 1902 को स्वामी विवेकानंद ने महा समाधि प्राप्त की फतेह विलास का शाही महल राजा अजीत सिंह के वंशजों के निजी अधिकार में रहा इसके बाद जब खेतड़ी के अंतिम राजा सरदार सिंह जी ने 1958 में महल को रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ को दान कर दिया । राजस्थान में रामकृष्ण मिशन की पहली शाखा 1959 में ऐतिहासिक फतेह विलास पैलेस में स्थापित की गई । इस भव्य भवन में स्वामी विवेकानंद और राजा अजीत सिंह की संगमरमर की मूर्तियां स्थापित की गई । जिस कमरे में स्वामी विवेकानंद रहा करते थे, उसे प्रार्थना कक्ष मैं बदल दिया गया । रामकृष्ण मिशन खेतड़ी ने महल के भीतर आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्र में अपनी गतिविधियां शुरू की । जिसमें आम जनता के उत्थान के साथ-साथ महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए शैक्षिक, सांस्कृतिक कौशल निर्माण और आध्यात्मिक रूप से उन्मुख कार्यक्रम शुरू किए गए । फतेह विलास महल में स्थित इस केंद्र को राजस्थान सरकार द्वारा 'प्रतिष्ठित स्मारक और विरासत स्थल' के रूप में मान्यता दी गई है । यह आध्यात्मिक, सेवा, इतिहास और संस्कृति का एक अनूठा मिश्रण है । फतेह विलास पैलेस में अब अजीत विवेक संग्रहालय है । जिसमें आकृतियां, तस्वीरें, पत्रों, पुस्तकों और पांडुलिपियों का संग्रह प्रदर्शित किया गया है । जो स्वामी विवेकानंद के जीवन व शिक्षाओं को समर्पित है ।

खेतड़ी पैलेस (झुंझुनूं) -

यह महल यद्यपि झुंझुनू शहर में स्थित है, पर इसका निर्माण भी खेतड़ी के ठाकुर भोपाल सिंह ने सन् 1770 में करवाया था । खेतड़ी पैलेस एक प्राचीन पुराना महल है जो मुख्य रूप से अपनी शानदार वास्तुकला और भव्य भित्तिचित्रों के लिए जाना जाता है। हालाँकि यह स्मारक अपेक्षाकृत छोटा है और वर्तमान में खंडहर में है, फिर भी यह शहर में एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है और पर्यटकों और स्थानीय लोगों दोनों को आकर्षित करता है। इसे विंड पैलेस के नाम से भी जाना जाता है । बड़े हॉल और गलियारों से युक्त खेतड़ी पैलेस में दीवारों के बजाय संगमरमर के खंभे हैं, ताकि हवा का मुक्त प्रवाह और अच्छा वेंटिलेशन सुनिश्चित हो सके। विभिन्न स्तरों और मंजिलों से युक्त, महल में कनेक्टिंग रैंप हैं ताकि घोड़ों और गाड़ियों को भी अंदर रखा जा सके। इसके अलावा, महल पुराने मुस्लिम क्वार्टर, पीरज़ादा महला और शहर के बाकी हिस्सों के शीर्ष से सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है।

पन्ना सागर तालाब - खेतड़ी शहर के बीचों बीच बने इस शानदार तालाब को पन्ना लाल शाह ने लगभग 1870-71 ईस्वी में बनाया था । यह तालाब अपनी कलाकृति एवं भव्यता का बेजोड़ नमूना है । इसके चारों ओर ऊंची दीवारें, स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग-अलग घाट, परिभ्रमण के लिए चारों तरफ पक्का फर्श, रहने के लिए बारहदरी तथा तिबारियां बनी हुई है । बारिश के पानी संग्रहण का यह पूरे विश्व में एक अद्भुत उदाहरण है । तालाब के पीछे पक्की नहरी बनी हुई हैं । नहरों के बीच में प्राकृतिक फिल्टर प्लांट लगा हुआ है, जो तत्कालीन समय का वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम व वर्षा जल संग्रहण का बेजोड़ नमूना है ।

खेतड़ी के मंदिर - खेतड़ी को मंदिरों की नगरी कहा जाता जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । यहां मंदिरों का निर्माण में राजाओं के शासनकाल में राज परिवार के सदस्यों का योगदान न केवल उनके धर्म कर्म में भाग लेने की प्रवृत्ति को दर्शाता है, बल्कि उस समय की बेजोड़ आकर्षक कला भी इन मंदिरों में स्पष्ट झलकती है ।

गोपीनाथ जी का मंदिर - गोपीनाथ जी का मंदिर भोपालगढ़ किले में स्थित है । इस मंदिर को खेतड़ी के राजा बख्तावर सिंह ने 1826-29 में अपनी रानी राणावत जी, जो की कृष्ण की बड़ी भक्त थी, की इच्छा पर बनवाया था । राजा बख्तावर सिंह ने उड़ीसा से पाषाण पत्थरों से बनी मूर्तियों की स्थापना करवाई । राजा ने न केवल मंदिर बनाया बल्कि पूरे मंदिर को महल का स्वरूप दिया । इस मंदिर में न केवल भगवान की मूर्तियां बल्कि अश्वशाला भजन कीर्तन के लिए बड़ा हॉल, कुआं, बाग और एक बड़ा तहखाना भी है । जयपुर के गोविंद देव जी मंदिर में स्थापित भगवान श्री कृष्ण व राधा की काले पाषाण की जो मूर्तियां हैं, उसी की तरह गोपीनाथ जी मंदिर के मंदिर में स्थित श्री कृष्णा और राधा की मूर्तियां हैं और मंदिर के स्थापत्य कला एवं डिजाइन भी जयपुर के गोविंद देव जी मंदिर के समान ही है इस मंदिर में लगी श्री कृष्ण भगवान की मूर्ति की आंखें मनमोहक आकर्षक होने से भक्तों को वशीभूत कर लेती हैं ।

राधा - कृष्ण की मूर्तियां गोपीनाथ मंदिर

श्री रघुनाथ जी का मंदिर - खेतड़ी कस्बे के मुख्य बाजार में पन्ना सागर तालाब के पास में यह भव्य मंदिर स्थित है । इसका निर्माण भी राजा बख्तावर सिंह ने अपनी रानी की इच्छा पर करवाया था । इस मंदिर को खेतड़ी में बड़े मंदिर के नाम से और चुड़ावत रानी के नाम से जाना जाता है । इस मंदिर में श्री राम जी एवं लक्ष्मण के साथ माता सीता की मूर्ति भी विराजमान है । इस मंदिर की प्रमुख विशेषता है कि इसमें भगवान श्री राम जी व लक्ष्मण जी की मूंछों वाली मूर्तियां हैं । शायद ऐसी मूंछों वाली श्री राम व लक्ष्मण जी की मूर्तियां राजस्थान के अन्य किसी मंदिर में नहीं है ।

श्री रामचन्द्र जी व लक्ष्मण जी की मूंछो वाली मूर्तियां

भोपालगढ़ का शिव मंदिर - खेतड़ी के भोपालगढ़ के मध्य में शिव मंदिर स्थित है । इसका निर्माण राजा अभय सिंह के समय हुआ । उनकी समाधि इसी मंदिर के उत्तर दिशा की तरफ उनके पुत्र बख्तावर सिंह जी के द्वारा बनवाई गई, जो वर्तमान में भी वहां पर मौजूद है ।

रानी सती मंदिर - रानी सती जी का मंदिर किले के बाहर दक्षिण दिशा में बना हुआ है । इस मंदिर के ऊपर भव्य छतरी बनी हुई है । इस मंदिर का निर्माण राजा शिवनाथ सिंह ने अपने पिता राजा बख्तावर सिंह जी की याद में करवाया, जिनके साथ उनकी रानी चुड़ावत जी सती हो गई थी ।

वाराही देवी का मंदिर - खेतड़ी कस्बे में वाराही देवी का अनूठा मंदिर है । जहां पर मां वार्ताली वाराही के अवतार में मनुष्य के शव पर विराजमान हैं, मान्यता है कि यहां के लोग खेतड़ी की कुलदेवी के चरणों में धोक लगाकर ही शुभ कार्य की शुरुआत करते हैं मंदिर की स्थापना करीब 500 साल पहले मेघ गर्जना के दौरान वार्ताली वाराही रूप में माता की प्रतिमा प्रकट हुई थी । वाराही माता के दो स्वरूप होते हैं । पहला स्वरूप वाराही जो शांत स्वरूप की घोड़ी पर सवारी करती है तथा दूसरा मां वार्ताली वाराही जिसमें माता विकराल रूप में भैंस की सवारी करते हुए मानी जाती हैं । मंदिर में स्थापित वाराही माता मनुष्य के शव पर विराजमान है ।इसकी स्थापना से पहले सामने शिव की प्रतिमा स्थापित करवाई । खेतड़ी में कोई भी मांगलिक कार्य वार्ताली वाराही मां की पूजा के बिना शुरू नहीं किया जाता ।नवरात्र में यहां विशेष आयोजन होते हैं । छठ और महाष्टमी पर यहां मेले जैसा माहौल रहता है ।

रियासतकाल से राजा महाराज इनकी चौखट पर शीश नवाते आए हैं । खेतड़ी के राजा भोपालसिंह अपना हर कार्य शुरू करने से पहले मां के चरणों में धोक लगाने आते ।

हनुमान गढ़ी मंदिर - राजस्थान का एकमात्र हनुमान गढ़ी मंदिर अयोध्या के बाद खेतड़ी में स्थित है । हनुमान जी के मंदिर की स्थापना यहां के निवासियों के द्वारा ही की गई है । जिसकी बनावट प्राचीन भारतीय कला को दर्शाती है । जिसमें मुख्य रूप से विशालकाय गुंबद, सुंदर चित्र, नक्काशी और मूर्तियां भी शामिल है । आज के वक्त ऐसी कला देखने को कम ही मिलती है, इसके अलावा परिसर में अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां भी स्थापित है।

खेतड़ी : इतिहास

खेतड़ी के इतिहास की चर्चा की जाए तो यह हमें आज से लगभग 4000 वर्ष पूर्व हड़प्पा सभ्यता तक ले जाता है । उस समय तांबा खेतड़ी से ही हड़प्पा सभ्यता के स्थलों तक जाता था । यहां के कांटली नदी के किनारे अवस्थित सुनारी नामक स्थान से लोह कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो कुषाण काल के माने जाते हैं । खेतड़ी ठिकाने की नींव रखने से पहले यहां खेत सिंह निर्वाण की बस्ती हुआ करती थी ।18 वीं शताब्दी में महाराजा शार्दुल सिंह शेखावत के पुत्र ठाकुर किशन सिंह के पुत्र भोपाल सिंह का विवाह जसरापुर के ठाकुर अमर सिंह निर्वाण की पुत्री से हुआ, उस समय इस हरितिमायुक्त पहाड़ी को भोपाल सिंह ने मांग लिया और वहीं पर भोपालगढ़ की नींव रखी एवं यही कस्बा खेतड़ी कहलाया । भोपाल सिंह के बाद बाघ सिंह जी उनके उत्तराधिकारी हुए उनको माधोजी सिंधिया द्वारा राजा की उपाधि दी गई । उनके उत्तराधिकारी राजा अभय सिंह हुए जिनकी राजा की उपाधि की पुष्टि जयपुर महाराजा द्वारा की एवं उन्हें कोटपूतली का परगना प्रदान किया गया। राजा अभय सिंह के उत्तराधिकारी राजा बख्तावर सिंह हुए जिनमें बाद क्रमशः राजा शिवनाथ सिंह व राजा फतेह सिंह शासक बने उनके बाद राजा अजीत सिंह खेतड़ी के शासक बने । जो खेतड़ी के प्रसिद्ध जनप्रिय शासक रहे । राजा अजीत सिंह व स्वामी विवेकानंद दोनों में प्रगाढ़ संबंध थे । दोनों एक दूसरे से प्रभावित एवं गहरे मित्र भी थे । अजीत सिंह ने स्वामी विवेकानंद को विवेकानंद नाम रखने का सुझाव दिया था । विवेकानंद अपने जीवन काल में तीन बार 1891, 1893, 1897 में खेतड़ी आए थे । राजा अजीत सिंह ने विवेकानंद के शिकागो जाने की व्यवस्था भी की थी । अजीत सिंह की मृत्यु के बाद राजा जयसिंह व राजा अमर सिंह शासक हुए । राजा सरदार सिंह बहादुर खेतड़ी के आखिरी राजा हुए । जो संविधान सभा के सदस्य भी रहे उनके समय देश में लोकतंत्र की स्थापना हुई ।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

1.खेतड़ी का इतिहास : पण्डित झाबरमल शर्मा
2.शेखावाटी वैभव : टी. सी. प्रकाश
3.शेखावाटी उद्गार
4. शेखावाटी दैनिक भास्कर
5. झुंझुनूं पत्रिका
6. शेखावाटी के प्रमुख दुर्ग : श्री ताराचंद प्रकाश